रख रही हैं और प्रौद्योगिकीय उन्नयन के साथ-साथ स्तर के कच्चे माल की उपलब्धता में सुधार लाने के माध्यम से उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को बढ़ाने के कदम उठा रही हैं । निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से सूती यार्न का उत्पादन कर रहे निर्यातोन्मूख एककों के लिए मानदंडों में ढ़ील दी गयी है तथा नियार्तकों को क्रेता विक्रेता बैठकों और अंतर्राष्ट्रीय मेलों वे प्रदर्शानियों में भाग लेने के लिए अत्यधिक उदारता का परिचय दें । मौजूदा नीतिगत ढांचे की पुनरीक्षा करने के लिए एक प्रोत्साहित किया जाता है । वित्तीय संस्थानों और बैंकों से अनुरोध किया जा रहा है कि वे सामान्यतया वस्त्र उद्योग के साथ-साथ निर्यातकों की ऋण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक विशेषज्ञ समूह गठित किया गया है जो कि उद्योग को थ्रस्ट देने के लिए सिफारिशें करेगा ।

वस्त्र मिलों में रूग्णता

298.**श्री बलवंत सिंह रामूवालिया**:

श्री वरजिन्दर सिंह:

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि पिछल कुछ वर्षो के दौरान कपड़ा मिलों में रूग्णता बढ़ जाने के कारण बंद होने वाली मिलों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है ;

(ख) यदि हां,तो अप्रैल,1996 और मई,1998 में क्रमशः बंद कपड़ा मिलों की संख्या क्या थी;

(ग) क्या यह भी सच है कि कपड़े के उत्पादन के लिए देश में कपास प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और श्रम-शक्ति का भी अभाव नहीं है;और

(घ) यदि हां,तो कपड़ा मिलों के निंरतर बंद होने के क्या कारण हैं ?

वस्त्र मंत्री(श्री काशीराम राणा): (क) और (ख) 30.4.96 और 31.5.98 तक बंद पड़ी हुई सूचित की गई सूती/मानव निर्मित फाइबर वस्त्र मिलों की संख्या क्रमशः 195 और 254 थी ।

(ग) वर्ष 1997-98 के दौरान कपास का उत्पादन लगभग 152.25 लाख गांठ था प्रत्येक गांठ 170 किग्रा.,जो कि इस समय पर्याप्त है । 31.3.98 तक की स्थिति अनुसार सूती/मानव निर्मित फाइबर वस्त्र मिलों की नामावलियों में लगभग 10 लाख कामगार थे ।

(घ) यद्यपि कोई विशिष्ट कारण नहीं बताया जा सकता फिर भी वस्त्र मिलों के बंद होने के अनेक कारण माने जा सकते हैं जिसमें अप्रचलित प्रौद्योगिकी,अंतनिर्विष्टियों की लागत में वृद्वि,समय पर तथा पर्याप्त कार्यशील,वित्त प्राप्त करने में कठिनाइंया,कुप्रबंध आदि शामिल हैं।

वस्त्र मिलों में आर्थिक मंदी

299.**श्री धर्मपाल यादव**: क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या देश का कपड़ा उद्योग भयंकर आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा हैं;

(ख) क्या सरकार व्यवसासियों को आर्थिक मंदी से बचाने के लिए कोई प्रभावी कार्यवाही कर रही है;

(ग) क्या सरकार कपड़ा उद्योग की उत्पाद-शुल्क संबंधी समस्या का समाधान करने का विचार रखती हैं;और

(घ) यदि हां,तो कब तक और यदि नहीं,तो उसके क्या कारण हैं?

वस्त्र मंत्री(श्री काशीराम राणा): दक्षिण-पूर्व एशियाई मुद्रा संकट विशेषतः वस्त्र निर्यात पर विपरीत प्रभाव के कारण,वस्त्र उद्योग में विकास कुछ हद तक काफी मंदा हुआ हैं ।

(ख) से (घ) कच्चे माल की गुणवत्ता में सुधार,प्रौद्योगिकी के उन्नयन,वित्तीय समायोजन तथा ऋण के अपेक्षित प्रवाह को सुनिश्चित करने के माध्यम से सरकार द्वारा वस्त्र उद्योग की स्पर्धा को बढ़ाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं ।

Import of Textile Products

300. SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state:

(a) whether the imports of textile products in the country are rising; and

(b) if so, the measures proposed to safeguard the domestic products?

THE MINISTER OF TEXTILES (SHRI KASHIRAM RANA): (a) Yes, Sir.

(b) In the various WTO agreements, there have been certain provisions for taking safeguard measures against cheap imports to any member country, including India. Government has been closely watching the import trends of textile products and if need arises Government would initiate steps for necessary safeguard action like imposition of countervailing duty, anti-dumping duty etc. to prevent the low cost import of textile products and to safeguard the domestic products.

वस्त्र के निर्यात में कमी

301.**श्री चीमनभाई हरीभाई शुक्ला**: क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या मार्च,1997-98 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में वस्त्रों का निर्यात निर्धारित लक्ष्य से काफी कम रहा हैं;

(ख) क्या सरकार ने उन परिस्थितियों का मूल्यांकन किया है जिनके तहत निर्यात को विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा हैं;

(ग) यदि हां,तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उन देशों के नाम क्या है जिनको भारत से होने वाले निर्यात में कमी आई है;और

(घ) इस कमी के क्या कारण है और निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?

वस्त्र मंत्री (श्री काशीराम राणा): (क) वर्ष 1997-98 के दौरान परिधानों के निर्यात की लक्ष्योपलब्धि लगभग 94.4 प्रतिशत थी।

(ख) से (घ) सरकार और अप्रैल निर्यात संवर्धन परिषद ने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रचलित ऐसी प्रतिकूल दशाओं का विश्लेषण किया है जिनके फलस्वरूप भारत से परिधान के निर्यात में गिरावट आती हैं। पश्चिम यूरोप में मांग में मंदी और दक्षिण पूर्व

एशियाई मुद्रा संकसट हाल ही में वर्षो के दौरान हमारे परिधान निर्यातों वृद्वि दर में गिरावट आने के लिए मुख्य कारण रहे हैं । यूरोपीय यूनियन,जापान,आस्ट्रेलिया,सीआईएस के देश,दक्षिण कोरिया,मैक्सिकों कुछ ऐसे देश हैं जिनमें परिधानों के निर्यात में गिरावट आई है । परिधानों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकार अनेक कदम उठा रही है जिनमें क्रेता-विक्रेता बैठकों,मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेने के लिए निर्यातकों को प्रोत्साहन देना,निर्यात उत्पादन के लिए रियायती शुल्क पर"पूंजीगत माल के आयात का अधिकार देना,निर्यात उत्पादन के लिए कच्चे माल के शुल्क मुक्त आयात के विशेष प्रबंध करना आदि शामिल हैं।

Upgradation of Textile Mills

302. DR. B.B. DUTTA: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state:

(a) whether Government have constituted an expert committee to have a fresh look at the existing textile policy;

(b) if so, the details thereof alongwith the terms and conditions of the said committee;

(c) whether Government propose to create a textile upgradation fund in view of the urgent need for modernisation and technological upgradation of the ginning, weaving and processing sectors; and

(d) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF TEXTILES (SHRI KASHIRAM RANA): (a) Yes, Sir,

(b) Government has set up an Expert Committee under the Chairmanship of Shri S. R. Sathyam on 24-7-98 to *inter-alia* review and evaluate the impact of the existing textile policy and suggest policy measures for the industry to focus on changes resulting from overall trade policy reforms.

(c) and (d) A proposal is under formulation to facilitate modernisation, through technological upgradation, of the textile industry. The intended objective is to improve production and productivity of the Indian textile industry to make it